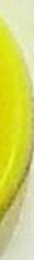
किसके हाथ गुलेल

अब्दुल बिस्मिल्लाह





किसके हाथ गुलेल



किसके हाथ गुलेल

अब्दुल बिस्मिल्लाह

अनंग प्रकाशन
दिल्ली-110053

अनंग प्रकाशन

ई-मेल : anangprakashan@gmail.com
फोन नं. 09350563707
ISBN : 978-93-80845-37-1

प्रथम संस्करण : 2014
मूल्य : 150 रुपये

अनंग प्रकाशन, बी-107/1, गली मन्दिर वाली, समीप रबड़ फैक्ट्री, उत्तरी घोण्डा, दिल्ली-110053, शब्द-संयोजन : सिद्ध-भभूति ग्राफिक्स, दिल्ली-110053, मुद्रक : रुचिका प्रिन्टर्स, दिल्ली-32 से मुद्रित।

भूले-बिछड़े
संगी-साथियों के नाम

ना ये साखी ना ये दोहे

पत्र-पत्रिकाओं में जब ये दोहे छपे तो कुछ विद्वान क़िस्म के लोगों ने कहा कि इन्हें 'दोहा' नहीं कहा जाना चाहिए, क्योंकि इनमें तेरह + ग्यारह = चौबीस मात्राओं के शास्त्रीय विधान का पालन नहीं हुआ है। उनकी यह बात अक्षरशः सत्य है। दोहे ये नहीं हैं, साखी भी नहीं—क्योंकि हो सकता है साखियों का भी कोई शास्त्रीय विधान होता हो।

लेकिन मेरे लिए ये दोहे ही हैं। क्योंकि सर्वप्रथम मैंने 'दोहे' को स्कूल की किताबों से नहीं, अपनी नानी और बुआ के उन किस्सों से जाना

है जिनके बीच में आने वाले अनगढ़ गीतों को वे 'दोहा' ही कहा करती थीं और ज़ाहिर है कि इन दोहों की रचना के दौरान मेरे ज़हन में लोकशैली के वही गीतात्मक दोहे रहे हैं, तेरह + ग्यारह = चौबीस मात्राओं वाले शास्त्रीय दोहे नहीं। हालांकि चन्द दोहे इस किस्म के भी मैंने रचे हैं।

एक बार श्रद्धेय त्रिलोचन जी को पत्र लिखते हुए उसमें मैंने एक दोहा भी लिख भेजा था, जिस पर अपनी टिप्पणी करते हुए उन्होंने उसे राजस्थानी शैली का ' वृहत् दोहा' कहा था। बाद में उनके एक पत्र का उत्तर मैंने चौबीस मात्राओं वाले दोहे में ही दिया–

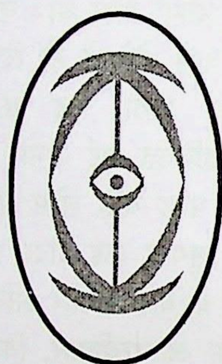
राउर पाती पाइ के,
तबियत भई अनार।
फटे परत यहि लोभ माँ,
सुगना कइ दीदार।।

ख़ैर... अपने इन दोहों के बारे में और अधिक कुछ कहना-वहना नहीं है मुझे। अन्त में सिर्फ़ एक आत्मस्वीकार, कि इन्हें रचते हुए कई बार कबीर और जायसी आदि कवियों की ओर उन्मुख हुआ हूँ और अपनी बात कहने के लिए यत्र-तत्र उनकी पंक्तियों का मैंने सहारा भी लिया है।

अब और क्या लिखूँ? थोड़ा लिखना ज़्यादा समझना– यह तो हमारे पूर्वज भी कह गये हैं।

– अब्दुल बिस्मिल्लाह

पुनश्चः 'ये कुछ दोहे और' शीर्षक के अन्तर्गत कुछ नए दोहे शामिल किए गए हैं।



देखी तेरी लीला राजा
देखा तेरा खेल।
चिड़िया मरी न मालुम, लेकिन
किसके हाथ गुलेल।।

सागर का क्या भेद

हंसा खायें काँकर–पाथर,
कूकुर पहनें ताज।
ऐ मेरी रानी ऐ मेरे राजा,
धन्य तुम्हारा राज।।

भौंरे क़ैद में डाले जायें,
तितली का हो ख़ून।
फूल से माँगे खुशबू रिश्वत,
तेरा यह क़ानून।।

पत्ती पत्ती झींगुर खायें,
बिरवा बिरवा कीट।
राजा तेरी फुलवारी में,
लागी किसकी डीठ।।

मेरे अच्छर अच्छर बोलें,
टूटा तेरा साज।
सोना मेरी धरती राजा,
माटी तेरा राज।।

नगर नगर में डंका तेरा,
नौबत बाजे द्वार।
बज जाने दो छन भर डफली,
इस दर भी सरकार।।

मरा न भूखा–प्यासा कोई,
जला न कोई फूस।
राजा तेरे घर के आगे,
कैसा आज जुलूस।।

क्यारी क्यारी चम्पा सूखे,
बेला सूखे बाग।
राजा तेरे अन्तःपुर में,
छिपा है कोई नाग।।

सूरज हिन्दू चन्दा मुस्लिम,
तारों की क्या जात।
किसकी साज़िश ये बेचारे,
टूटें आधी रात।।

डाल–डाल पर ख़ुदा लिखा,
औ' पात–पात पर राम।
कौन चिरइया असगुन बोली,
जंगल जला तमाम ।।

सागर सागर शासन तेरा,
बस्ती बस्ती राज।
तेरी रैयत मांगे तुझसे,
अपना हिस्सा आज।।

किसकी खातिर फांसी–फंदा,
किसका हो कल्याण।
सीता अपनी रावण अपना,
दुविधा में हैं प्राण।।

गली गली में चर्चा तेरी,
शहर शहर में नाम।
राजा तेरे नैन का जादू,
हुआ जो क़त्ले–आम।।

चाँदी के हैं महल अटारी,
माटी का है ढोल।
राजा तेरे राजमहल की,
माया है अनमोल।।

जादू के हैं महल दुमहले,
जादू के हैं बाट।
जादू का दरबार लगा है,
जादू के हैं हाट।।

बजा बजा के तेरा डमरू,
रहा मदारी चीख़।
जादू के इस हाट में राजा,
गुनिया माँगें भीख।।

क़दम क़दम पर कील गड़े हैं,
आँगन–आँगन काँच।
अपने जोखिम पर ऐ नटवर,
नाच सके तो नाच।।

इस नगरी का हाल न पूछो,
मालिक है करतार।
भीतर चिता जली है साथी,
बाहर है त्योहार।।

बारी बारी कुम्हड़ा फूले,
छानी छानी सेम।
तेरे महल तो कागज फूलें,
ना कुम्हड़ा ना सेम।।

अपना तौर-तरीक़ा बदलो,
बदलो अपना भेस।
वरना पानी में घुल जाये,
काग़ज़ का यह देस।।

बन बन काँपें लाल-परेवा,
भूल के नख़रा-नाज़।
राजा तेरे सिंहासन पर,
बैठा कोई बाज़।।

राजा निठुरा चाकर निठुरे,
निठुरा है संसार।
मेरी उँगली थाम ले साथी,
बिनती बार हज़ार।।

ताल ताल का पानी महके,
बदबू फैली झील।
तेरे महल के कंगूरे पर,
बैठी राजा चील।।

जगह जगह पर जाल बिछे हैं,
रहना जी हुशियार।
जनता तेरी बोली बोलें,
राजा के अख़बार।।

वे ख़ुशक़िस्मत और हैं साथी,
जिन पर उनका ध्यान।
यूँ तो हमने भी देखी है,
राजा की मुस्कान।।

बन बन डोले सोन चिरइया,
ढूँढ़े अमृत–नीर
तेरे माहुर–राज में राजा,
कहाँ है अमृत–नीर।।

कुछ ही दिन हैं और अमन के,
कर ले मन का नाच।
फिर तो निर्णय होगा राजा,
क्या झूठा क्या साँच।।

या आँधी में उड़–फुड़ जाये,
या जल बीच समाय।
तेरी ये धरती तो राजा,
ख़ून में रँगती जाय।।

अमराई में कौवे बोलें,
बेला हुआ बबूल।
राजा तेरा राज तो जैसे,
बिन पंखुरि का फूल।।

ना हम बन्दर ना हम भालू,
क्या राजा का साथ।
नाना नाच नचाय के साथी,
राखै अपने हाथ।

तीर–धनुष के मोल–तोल में,
बिके मजूर करोड़।
बड़ी दलाली हमने देखी,
मिला न इसका जोड़।।

देखी तेरी लीला राजा,
देखा तेरा खेल।
चिड़िया मरी न मालुम लेकिन,
किसके हाथ गुलेल।।

आस्तीन में हाथ छिपे हैं,
काँख छिपा क़ानून।
हमने सिर्फ़ उँगलियाँ देखीं,
यकदम ख़ूनमख़ून।।

देखे दूर के दर्शन तेरे,
देखे सब अख़बार।
चले इन्हीं के बल पर सारा,
तेरा कारोबार।।

लाठी उनकी भैंस उन्हीं की,
उनका चारागाह।
मारें पीटें चरें दुहें वे,
हैं वे शाहंशाह।।

ना तुलना ना जोड़ हमारा,
इक नदिया इक कूप।
हम माटी के वासी ठहरे,
तुम माटी के भूप।।

ना नदियों में नीर बचा है,
ना तरुओं में छाँव।
कल मुआयने में राजा के,
पाहुन आये गाँव।।

माह दिसम्बर साँझ की बेला,
कविया गया बजार।
देखे उसने प्रजातंत्र के,
नंगे जिस्म हज़ार।।

घूमें ताजमहल खजुराहो,
आयें जो मेहमान।
दिल्ली के फुटपाथ पे हम तो,
देखें हिन्दुस्तान।।

एक अचम्भा हमने देखा,
राज करें बक़्क़ाल।
लालक़िले के बाहर सोयें,
भारत माँ के लाल।।

ना तो दीखे सरग तरइया,
ना बादल की छाँव।
पसरा संगीनों का साया,
साथी अपने गाँव।।

ख़त्म हो गये सब रजवाड़े,
सामंती दरबार।
पर इनके ही हाड़–माँस से,
बनी नयी सरकार।।

कहे बँदरिया से बाज़ीगर,
ऐसा खेल दिखाव।
भोजराज के सिर की पगड़ी,
गंगू को पहनाव।।

इस माटी का मोल अमोला,
मुफ़्त न बेचो भाय।
इस माटी के तेज से नृप का,
तख़्त भसम हो जाय।।

उनका कहना धरती उनकी,
उनका ये संसार।
अपना कहना धरती अपनी,
अपना ये संसार।।

इक इक पिंजरा सबको बाँटा,
मैना भेजी साथ।
हम तेरे दरबार से राजा,
जायें खाली हाथ।।

ना चाहें हम हाथी घोड़ा,
ना चाहें तलवार।
अपनी धरती पर अपना हक़,
चाहें हम सरकार।।

ना चाहें हम जन्नत तेरी,
ना जन्नत की हूर।
अपनी दुनिया अपनी धरती,
माँगें सिर्फ़ हुज़ूर।।

क्या जाने क्यों ना डूबे यह,
सागर का क्या भेद।
हमने तेरी नाव में राजा,
देखे सौ सौ छेद।।

अब तो थोड़ा सोच समझकर,
खेलो अपना खेल।
तेरे दीपघरों में राजा,
चुकता जाये तेल।।

थोड़े दिन की बात है साथी,
कर ले पिंजरा–वास।
फिर तो चिड़ियाँ राज करेंगी,
और बहेलिया दास।।

गोरी घूमें खेत

किसकी माटी किसकी खेती,
किसका है खलिहान।
दाना ले जाय बनिया सारा,
फांके धूल किसान।।

मेरी हँसी उड़ा मत साथी,
बोली उन पर बोल।
जिन लोगों ने सारे जग का,
सुख ले रक्खा मोल।।

ढूँढ़ा बाग बगीचा राजा,
ढूँढ़ा सारा गाँव।
जिसने मेरी खेती रौंदी,
मिला न उसका ठाँव।।

बाली बाली शहद भरा है,
दाना दाना दूध।
उनके चार सिपाही आकर,
बाड़ गये हैं रूंध।।

मेंड़ पे बैठा-बैठा साथी,
क्या मन में पछताय।
मचा तमाशा नट-बेड़िन का,
देखौ दिल्ली जाय।।

ना माँगें हम सोना–चाँदी,
ना माँगें धन–धाम।
बाढ़ में डूबी बस्ती अपनी,
माँगें थोड़ा घाम।।

तने खड़े हैं ज्वार–बाजरा,
मन इठलाये धान।
किस गोदाम सड़ेंगे जाकर,
बेचारे अनजान।।

इस रस्ते ना आये कोई,
ख़बर टिटिहरी देत।
कर में धान–धनुहियाँ ले के,
गोरी घूमें खेत।।

बगिया बगिया भौंरे नाचें,
नदिया नदिया मीन।
हम नाचें तो कैसे नाचें,
साथी पाँव अधीन।।

अपने सपने के छौने को,
ले जाऊँ किस छोर।
उनके टोने का फंदा तो,
फैला चारों ओर।।

चँगेरवा : यानी प्रश्नोत्तरी

किस घर जनम लिया ईसा ने,
किस घर में घनश्याम।
किस घर पैदा हुए मुहम्मद,
किस घर पैदा राम।।

ऊँचे घर में ईसा जन्मे,
ऊँचे घर घनश्याम।
मुखिया के घर हुए मुहम्मद,
राजा के घर राम।।

किस घर तुलसीदास हुए हैं,
किस घर दास कबीर।
किस घर जनम लिया अब्दुल ने,
मिले कहाँ ये तीर।।

याचक के घर तुलसी आये,
जोलहा–बंस कबीर।
अब्दुल तो बेघर हैं पैदा,
जग ने दिये ये तीर।।

किस बन कूके कोयल कू कू,
किस बन नाचे मोर।
किस बन पंछी के खोंथे में,
लागा काला चोर।।

नन्दनवन में कोयल कूके,
नाचें तीतर–मोर।
इस बन के तो हर खोंथे में,
लागा काला चोर।।

किस दर हाथी किस दर घोड़े,
डोला किसके द्वार।
कहाँ सवारी वह जिस पर हम,
होंगे कभी सवार।।

राजा के दर हाथी–घोड़े,
डोला रानी–द्वार।
उनकी पीठ सवारी अपनी,
होंगे कभी सवार।।

ना तोता ना काग

तेरी बगिया में देखे थे,
कैसे कैसे फूल।
खोली जो सौगात की गठरी,
निकले ख़ार बबूल।।

रात का साथी चाँद तुम्हारा,
दिन का साथी सूर।
हम दिन-रात अकेले घूमें,
ना चन्दा ना सूर।।

तेरा नाम न लेंगे अब हम,
अपने नाम के साथ।
तेरे हाथ में दुनिया सारी,
हम हैं खाली हाथ।।

महलों महलों राजा घूमें,
मंदिर में भगवान।
इस कुटिया में कोई न आये,
राजा ना भगवान।।

मंदिर मंदिर घण्टा गूँजे,
मस्जिद गुँजे अज़ान।
भक्त की कुटिया खाली थाली,
गुँजे भूखी तान।।

पीपल पीपल देव बसे हैं,
क़ब्रस्तान शहीद।
माटी–जना मनुष्य बिचारा,
लिए फिरे उम्मीद।।

जैसे बीतें गर्मी–सर्दी,
वैसे ही बरसात।
तनख़ाहों से दिन हैं अपने,
क़र्ज़े सी है रात।।

दो कौड़ी का सूरज बिकता,
चाँद बिके बेभाव।
मैं इस हाट में लेकर आया,
एक पुरानी नाव।।

इस पपिहा को स्वाति नखत ने,
बन में दिया जवाब।
पत्ता-पत्ता नदी दिखे,
पत्थर पत्थर तालाब।।

सावन सूखा भादों सूखा,
फागुन उमड़े मेह।
वो बैरी भी गरज के रह गये,
धरती हो गयी रेह।।

पानी पानी बादल बादल,
बिजली बिजली बूँद।
किसके मौन इशारे पर लीं,
सबने आँखें मूँद।।

गली गली में दीवाली है,
आँगन आँगन ईद।
इस चौखट पर सुबह-सवेरे,
लोथ हुई उम्मीद।।

बगिया बगिया जंगल जंगल,
फूला है कचनार।
एक कबूतर बरसों से है,
गुम्बद में बीमार।।

बगिया भीतर भौंरा विचरे,
भौंरा भीतर गान।
बीच बजरिया लूटी किसने,
साथी अपनी तान।।

पिंजरा पिंजरा तोता बोले,
डाली डाली काग।
इस बस्ती में कोई न बोले,
ना तोता ना काग।।

गेहूँ जैसा रूप तुम्हारा

पानी भीतर चंदा लहरे,
चंदा भीतर आग।
मन भीतर मेहमान बसा है,
छत पर बोले काग।।

नद्दी नद्दी नाला नाला,
मैंने ढूँढ़े सीप।
तुमने मेरे मन में बारे,
नैनों के दो दीप।।

गेहूँ जैसा रूप तुम्हारा,
खुशबू जैसे धान।
हँसी तुम्हारी गेंदा जैसी,
नैना जैसे पान।।

कलियों कलियों फूलों फूलों,
उजली भूरी धूप।।
किसने तेरी गंध उड़ायी,
किसने तेरा रूप।।

फूल ने शायद गंध उड़ायी,
धूप ने शायद रूप।
केसर भर भर डलिया उलचें,
सोना भर भर सूप।।

तेरी देह से रंग चुराकर,
फूला बन में पलाश।
इस बन को जो नज़र लगाये,
उसका सत्यानाश।।

कोंपल कोंपल आँखें तेरी,
डाली डाली पाँव।
इस काया के बिरछ में संगी,
चन्दन जैसी छाँव।।

भर भर जायें ताल-तलैया,
भर भर जायें कूप।
कैसी ये रसधार बहाये,
संगी तेरा रूप।।

गंगा जैसा मुखड़ा तेरा,
जमुना जैसे नैन।
संगी तेरी काया जैसे
सूरज झलके रैन।।

तेरे तन की छाँव में संगी,
जामी धानी घास।
जहाँ जहाँ तेरे पाँव पड़े हैं,
माटी फूटी बास।।

तू तो डोले अपनी नगरी,
महके मेरा गाँव।
संगी तेरा सपना जैसे,
युकिलिप्टस की छाँव।।

कौन दिखाये खेल तमाशा,
कौन दिलाये जोश।
जिसने तेरा जादू देखा,
वह तो है बेहोश।।

कैसा जादू कैसा मंतर,
कैसी है मनुहार।
तेरे घर का चक्कर काटे,
चन्दा सौ सौ बार।।

जंगल जंगल रूप का दरिया,
ऐसी प्यासी चाह।
कूद पड़ा मन का हिरनौटा,
सागर नीर अथाह।।

भाये जिसका तोहफ़ा तुमको,
खुशियन करो कबूल।
रख लो अपने बकस में संगी,
मेरे भी दो फूल।।

तेरी आँखों के ये जुगनू

छूटे नाते ख़ास।
कोई बता दे कैसे काटें,
सीता बिन बनवास।।

जिसने ऐसा शाप दिया है,
कहाँ है उसका गाँव।
मेरे घर में कभी न आयें,
गौरैया के पाँव।।

किस मुँह से मैं गाँव में घूमूँ,
किस मुँह जाऊँ बिदेस।
तेरा मेरा नाता टूटा,
चर्चा है चहुँ देस।।

जंगल जंगल टेसू फूले,
पर्वत पर्वत बाँस।
संगी तेरी याद में फूले,
मेरे आँगन काँस।।

मैं उसे दूध-ज़लेबी दूँगा,
दूँगा अपनी प्रीत।
चोंच में भर लाये जो पंछी,
तेरे सगुन के गीत।।

अपने आँगन में उँगली से,
संगी तेरा नाम।
लिक्खें काटें काटें लिक्खें,
रोज़ सबेरे शाम।।

ना मैं चाहूँ पाती कोई,
चाहूँ न कोई ख़्वाब।
अपनी अंगूरी भौंहों का,
भेजो एक गुलाब।।

कोयल ऐसी बोली बोले,
बगिया बौरे आम।
संगी तेरी चुप्पी खटके,
छन छन आठों याम।।

दिन भर कूके कोयल संगी,
महुआ टपके रात।
अबकी भरे बसंत में हमसे,
करे न कोई बात।।

झुरमुट झुरमुट झाड़ी झाड़ी,
बोल–कुबोल न बोल।
अपना रूप दिखा दे संगी,
घूँघट का पट खोल।।

पिछले पहर में नींद हमारी,
अक्सर जाये टूट।
लगता दिया बहाया जिसमें,
गया घड़ा वह फूट।।

तेरी सोच में संगी रह रह,
ऐसा मन हो जाय।
जैसे बन में भटके कोई,
झुण्ड से बिछुड़ी गाय।।

बाहर पागल कुत्ता भूँके,
बारी खड़के पात।
मेरे मन का बालक रोये,
संगी सारी रात।।

कली-कली पर भौंरा उछले,
तितली उछले फूल।
बचपन मिला मुझे भी लेकिन,
बन्द पड़ा स्कूल।।

अपनी लिखावट के तुमने तो,
चिह्न दिये सब मेट।
खाली मेरी कापी संगी,
सूनी मेरी स्लेट।।

हम तो तय करके बैठ थे,
देंगे लिखी मिटाय।
किन्तु लिखी होती कुछ तब तो,
होते सफल उपाय।।

ना तो खेत बगीचा उपजे,
ना तो हाट बिकाय।
अपने मन का संगी खोजन,
कविया किस दिस जाय।।

ना तन काबू ना मन काबू,
लाख करूं तदबीर।
किस औषध से जाये संगी,
ऋतु बसंत की पीर।।

जो अँग छुआ काठ का निकला,
क्या उँगली क्या बाँह।
ऐसा पेड़ बसेरा अपना,
ना फल लगे न छाँह।।

ऐ मेरे नेह की देवी कोई,
ऐसी दुआ तू खोज।
कि तेरी चौथी[1] मेरा तीजा[2],
पड़ें एक ही रोज़।।

1. विवाह की एक रस्म।
2. मृत्यु की एक रस्म।

इन्तज़ार में हुआ सवेरा,
हुई लगन में शाम।
लिख दो अपनी कलम से कोई,
चिट्ठी मेरे नाम।।

ऊजड़ धरती दुनिया बंजर,
सागर रेगिस्तान।
किस बगिया के खूँट सहेजूँ,
जूही सी मुस्कान।।

इस बिरछा में पात न लागें,
विधना भी मजबूर।
मन में नीड़ बना कर संगी,
उड़ मत जाना दूर।।

क्यों भेजी तस्वीर रे संगी,
मन मेरा बेचैन।
टपकें नींद के ताल में रह रह,
जामुन जैसे नैन।।

रचा न जाने किस मूरख ने,
पान–फूल का साथ।
अब तो बात जगत में फैली,
लाज तुम्हारे हाथ।।

तेरे गाँव से चिट्ठी आयी,
लिखा न तेरा नाम।
जिस पर तेरा नाम न हो,
उस काग़ज़ का क्या काम।।
तेरे पाँव दुखे पगडण्डी,

नैन रहे बेताब।
तूने मेरा रस्ता देखा,
मैंने तेरा ख़्वाब।।

तुमने जिसे छिपाया संगी,
मौन धरे दिन-रात।
कितनी आसानी से कह दी,
आँखों ने वह बात।।

तेरे गाँव की दीवारों पर,
पाती लिखे कपास।
उड़ उड़ आयें रुई के गाले,
संगी मेरे पास।।

दिन दिन भर हो पूछ–पुछौवल,
कहत पिरीत लजात।
मन का इकतारा तो संगी,
बाजे आधी रात।।

मंगल और अमंगल सोचूँ,
बैठ बबूल की छाँव।
ताँगा–लदा ताज़िया जाये,
संगी तेरे गाँव।।

अमर प्रीत की जोत बिखेरे,
धरे दीप के भेस।
तेरी आँखों के ये जुगनू,
जलें हमारे देस।।

चाहो तो कतवार में फेंको,
संगी सारे ख़्वाब।
पर कविया को हुआ अगर कुछ,
देगा कौन जवाब।।

ये तो रोग बियोग

तेरे असह बियोग में संगी,
उजड़ गया संसार।
ना बगिया में बेला फूलै,
ना बन में कचनार।।

बिन संगी जिनगी भइ माटी,
रहा न मन में चाव।
इस बीहड़ में मगर दिखे ना,
कोई कुआँ तलाव।।

ना कोयल की कू–कू भाये,
ना कौए की काँव।
कुआँ दिखे तो कूद पड़ूँ मैं,
अगिन दिखे जल जाँव।।

झाड़–फूँक का असर न कोई,
हारे पीर–फ़कीर।
मन का काँटा कैसे निकले,
कठिन दगा की पीर।।

ना जोतिषि का जोतिष लागे,
ना जोगी का जोग।
टोना हो तो टोट्का होये,
ये तो रोग बियोग।।

यहाँ न कोई पेड़–पखेरू,
ना सपनों की आड़।
पंख जो होते लाँघ के आता,
जंगल नदी पहाड़।।

सागर चकित नदी सकते में,
ठाड़ा मौन पहाड़।
एक अनोखा तारा टूटा,
दुनिया दई उजाड़।।

सबके दाँतों में उँगली है,
गाँव–शहर–बाज़ार।
ऐसी चिड़िया कभी न देखी,
जिसके चोंच अँगार।।

बीज जलाकर पौध लगाया,
सोची नीच न ऊँच।
ऐसा फूल खिला डाली पर,
सूखा तना समूच।।

एक रात का मेला संगी,
फिर घर-बाहर सून।
सागर पानी पानी रोये,
पंछी रोयें ख़ून।।

यश-अपयश सब दाँव लगाया,
चाल चली व्यवहार।
इतनी मुश्किल बाज़ी जीती,
और गया मैं हार।।

दूर क्षितिज पर सूरज चमके,
रँगे धरा के छोर।
फिर क्यों काला सागर फैला,
मेरे चारों ओर।।

रहचलतों से नाते जोड़े,
मीत मिला ना कोय।
अब तो फूट पड़ें ये नैना,
और मरूँ मैं रोय।।

तन मन झुलसा दुनिया झुलसी,
झुलसा अपना प्यार।
जिस दीवार से छाया चाही,
उसमें मिली दरार।।

दूध-भात का कौर बनाकर,
देते ज़हर मिलाय।
मिठ्बोली से अशुभ सुनाया,
यह दुख कहाँ समाय।।

ना सूरज-सा सूरज दीखे,
ना चंदा सा चाँद।
आँखमिचौनी का खेला अब,
गया हदों को फाँद।।

मन हलकान करो कितना ही,
नैना नीर भिगो़य।
फूट गया यदि घट माटी का,
दूजा जनम न होय।।

मुद्दत बाद नतीजा निकला,
औ' है हाहाकार।
इम्तहान में फ़ेल हुआ है,
अपना सिरजनहार।।

मंदिर अंधा मस्जिद बहरी,
किससे करूँ जुहार।
जिसने खेत जलाया मेरा,
उसके बाग़ बहार।।

चुप हैं जंगल पर्वत चुप हैं,
चुप हैं गाँव-जवार।
ऐसा खेल कहीं ना देखा,
गया मदारी हार।।

मरै न मारे खड़ग कुल्हाड़ी,
जरै न जारे काँस।
ऐसा अपना दुश्मन संगी,
ना ओहि हाड़ न माँस।।

जिस-जिस टहनी किया घोंसला,
उस पर बैठा चोर।
माटी हुई कनक-सी काया,
मन भटके दस ओर।।

जो रूठे होते तो लेता,
मैं सौ बार मनाय।
टूटे मगर खिलौना जैसा,
जोड़ूँ कौन उपाय।।

इतनी सकत नहीं अब संगी,
बीस तलाशूँ राह।
ना ये जिनगी खेल–खिलौना,
ना गुड़िया का ब्याह।।

धुर ऊसर में खोये संगी,
मरी प्रीत की भूख।
किससे पूछूँ पता तुम्हारा,
ना याँ पेड़ न रूख।।

मैंने चाहा बरखा आये,
बरसी विष की धार।
चाहा सूरज चमके घर पर,
चमक उठे अंगार।।

जिसमें अपना चेहरा देखूँ,
दर्पण चकनाचूर।
ऐसा चाँद उगा सागर पर,
पानी हुआ कपूर।।

ना चाहूँ धन–दौलत संगी,
ना चाहूँ ये नाम।
चाहूँ एक धरौंदा जिसमें,
उगे जुन्हैया शाम।।

कितने संगी साथी आये,
गये समुद के पार।
अब्दुल रहे किनारे बैठे,
सीप चुनें मुर्दार।।

आगे–पीछे दाएँ–बाएँ,
गाछ बिरिछ की भीड़।
एक चिरइया रही न बन में,
किस हित साजूँ नीड़।।

इक दिस आग दुसर दिस नागिन,
जान बचे किस तौर।
ऐसा दगा किया संगी ने,
कहीं न दीखे ठौर।।

मुँह में नाम औ’ नशा नयन में,
गीत भरे हैं जेब।
लोग कहे हैं अब्दुल जी को,
लगा कहीं आसेब।।

कैसा जादू डाला तुमने,
चर्चा देस-बिदेस।
अब्दुल का तो हाल बुरा है,
घूमें भेस-कुभेस।।

नाते रिश्ते संगी साथी,
मजमा चारों ओर।
अब्दुल फिरें अकेले फिर भी,
लिए प्रीत की डोर।।

हर आहट में आहट तेरी,
हर छाया में रूप।
मगर न आहट और न छाया,
चहुँ दिस खाली धूप।।

किस किस को मैं क्या समझाऊँ,
कर कर टाल मटोल।
सारा जीवन बीता संगी,
सहे न इतने बोल।।

बरन बरन के पंछी आये,
बरन बरन के लोग।
इस बस्ती में तुम ना आये,
कैसा कठिन बियोग।।

ना बौरै अमराई बौरी,
ना फूलै बन ढाँख।
जाँव त जाँव कहाँ मैं संगी,
ना मोंहि पाँव न पाँख।।

जिन दोहों में याद तुम्हारी,
और तुम्हारा प्यार।
उन दोहों का लिए जनाज़ा,
घूमूँ बीच बज़ार।।

शब्द शब्द संकेत तुम्हारा,
अच्छर अच्छर बोल।
मन में मन गठिया कर संगी,
अरथ अमोला खोल।।

पच्छुम डूबे चाँद

जिनगी सारी सुई बनाकर,
अनुभव-धागा लाय।
सिला अनोखा जामा हमने,
माटी मोल बिकाय।।

किये हज़ारों खेल-तमाशे,
बेबंधन बेरोक।
अब तो चाँद-सितारों के संग,
बसें बिराने लोक।।

तेरी दुनिया त्यागी उसने,
जिसकी हुई पुकार।
कोई मेरा नाम बता दे,
संगी अबकी बार।।

हार–जीत का ठीक नहीं है,
अजब सफ़र का खेल।
ना जाने किस टेसन जाकर,
रुक जाये ये रेल।।

बिरिछ बिरिछ के पंछी सोये,
सिंहा सोये माँद।
ऐ मेरे अब्दुल तू भी सो जा,
पच्छुम डूबे चाँद।।

ना हों संगी ना हों साथी,
ना हों नातेदार।
अब्दुल की जब मैयत निकले,
दुखिया हों दो–चार।।

मन है लालमलाल

कूच किया किस गढ़ की जानिब,
राह खड़ग की धार।
कर में फूल-बान ले डोले,
इक अलबेली नार।।

रँग-रँग मनुवा रँग-रँग फुलवा,
नीला लाल सफ़ेद।
इक धरती इक जल इक वायू,
बिरछ-बिरछ का भेद।।

इक जल भीतर इक जल बाहर,
इक जल उड़े अकास।
फिर भी कविया! जल को तरसे,
किस जल की है आस।।

एक फूल का रंग सुनहरा,
दूजा फूल सफ़ेद।
इक ही डाल पे फूलैं दोनों,
क्या जादू क्या भेद।।

हँसना और हँसाना अपना,
ज्यों सेमल मधुकाल।
तन काँटों से बिंधा है साथी,
मन है लालमलाल।।

तेरह+ग्यारह

किस कंता की कामिनी,
रस्ता रही अगोर।
जले चाँद की राख को,
ताके चकित चकोर।।

जंगल जल ऊसर भया,
सागर जल मैदान।
मैं बपुरा ऐसा जला,
ऊसर ना मैदान।।

बढ़ी नदी के पाट में,
बस्ती गयी समाय।
लहर लहर से प्राथना,
संगी देव बताय।।

इतनी अगिन समुद्र में,
पानी सब जल जाय।
वास न होता मीन का,
जिनगी थी निरुपाय।।

हरे-भरे कचनार को,
चूसे अम्मरबेल।
हँसी-हँसी में खेल मत,
जियन-मरन का खेल।।

आँखिन में निंदिया नहीं,
संगी काले कोस।
जनम अकारथ है गयो,
पड़ी आस पे ओस।।

अँखियन अँखिया डाल के,
कही कौन सी बात।
इत-उत मुरहा-सा फिरे,
अब्दुल सारी रात।।

बाँधी कैसी गाँठ रे,
तड़क गयी वह डोर।
मारे मारे फिरत हैं,
नैना चारों ओर।।

फ़सल न चन्दा पर उगे,
कुआँ न जनमे सीप ।
तेज बिराजे स्नेह में,
पानी जले न दीप।।

प्रीत न पंछी–सा उड़े,
चढ़े न रेल–जहाज़।
अलख यान पर बैठकर,
पहुँचे दूर–दराज़।।

बिनु दाना सुग्गा मुआ,
गाय मरी बिनु घास।
बिनु संगी हम जियत हैं,
लिए असंभव आस।।

करत ढिठाई सबन सों,
बाघ खड़ा खलिहान।
किस बिध मुलाँ शिकार हो,
ऊंचा बँधा मचान।।

रजधानी की भीत पर,
रिश्ते चलें उतान।
मीत सभी टुच्चे मिले,
दुश्मन सब नादान।।

जिनगी बीती दुंद में,
स्वप्न रहे सब खेत।
काशी तज दिल्ली बसे,
मुए पेट के हेत।।

सजन तुम्हारे गाँव–घर,
है कैसी अंधेर।
राम–ख़ुदा की जंग में,
हुए पखेरू ढेर।।

धुआँ सरोतर फइल गऽ,
जरल जमीन अकास।
तइँ सा हँसी मजाक मां,
रूठल हवा बतास।।

याद करेगी दुनिया सारी

ना ये साखी ना ये दोहे,
ना ये राग–विराग।
इनमें अब्दुल की दुनिया है,
दुनिया जिसमें आग।।

ना ये हिन्दी ना ये उर्दू,
ना ये और ज़बान।
जनता बोले जनता समझे,
जनता के ये गान।।

कैसे कहूँ कि मेरी कविता,
खींचे नयी लकीर।
मेरे दो–दो बाप हुए हैं,
तुलसी और कबीर।।

ना चाहूँ मैं तमगा पदवी,
ना चाहूँ इनआम।
चाहूँ दुनिया की तब्दीली,
इन दोहों के दाम।।

कौन हमारे दोहे गाये,
कौन मचाये शोर।
ना बगिया में चिरई–चुनगुन,
ना जंगल में मोर।।

गढ़ टूटेगा हिय का जब भी,
होंगे नैन कमंद।
लोग धुनेंगे सिर गा-गाकर,
इस कविया के छंद।।

जब राजा अन्याय करेगा,
प्रिया आएगी याद।
मर्म खुलेगा इन दोहों का,
साथी मेरे बाद।।

जब जनता इतिहास लिखेगी,
बदलेगा भूगोल।
याद करेगी दुनिया सारी,
कवि अब्दुल के बोल।।

ये कुछ दोहे और

ऐसे बन में आ मिले,
दो दुखियारे जीव।
जहाँ न कोकिल की कुहुक,
ना पपिहा का पीव।।

मोती उपजे सीप में,
उगे घास मैदान।
जिसकी जैसी प्यास हो,
जल तो सिर्फ़ निदान।।

जेते वे ऊँचे गये,
तेते करतब नीच।
जेते जल तालाब में,
तेते जल में कीच।।

मानुष केरा बाचरा,
जन्मा ऐसे देस।
रकत धार नदिया बहे,
गुण्डे राजा भेस।।

निस दिन पूजो भेड़िया,
जब तब भजो सियार।
ना जाने किस भेस में,
मिल जाए सरकार।।

हाट लगा है धर्म का,
भक्त जनन को छूट।
जान माल सब है यहाँ,
लूट सकै जो लूट।।

राजा पंडित मौलवी,
सब मिलि कीन्हीं घात।
जीभ निकाले आ रही,
महाकाल की रात।।

नाच रहा है ईश्वर,
बदल बदल कर भेस।
कलप रही हतभागिनी,
धरती खोले केस।।

जूठी हड्डी फेंक कर,
औ' कुत्तों को टेर।
अपने अपने महल में,
सोये पड़े कुबेर।।

बंदा मस्जिद चाहता,
मंदिर चाहे भक्त।
ना कुछ चाहनहार का,
बहे सड़क पर रक्त।।

ऐसी लीला मत करो,
अरजी है भगवान।
मंदिर मस्जिद खड़े हों,
बस्ती हों वीरान।।

घर आँगन मातम मचे,
धरती पड़े दरार।
ना चहिए ऐसे हमें,
कलश और मीनार।।

उमा तिहारे स्वाँग से,
ना टूटे यह प्रीत।
जुम्मन और जगेश की,
मिली भीत से भीत।।

गुरु ने पूछा शिष्य से,
महाबली का अर्थ।
उत्तर मिला तपाक से,
जो कुल करे अनर्थ।।

पहले दो दो बली थे,
आपस में थी डाह।
महाबली अब एक है,
दूजा दूजी राह।।

वही जिएँगे शान से,
जो हैं उसके संग।
महाबली का मानना,
बाक़ी कीट पतंग।।

कीट पतँग के वास्ते,
बैर मोल ले कौन।
महाबली के ख़ौफ़ से,
गहे सभी ने मौन।।

साधु कहे सत् ईश्वर,
फूल कहें सत् रंग।
बहाबली की आस्था,
सत् है केवल जंग।।

जंग बढ़ाये गर्व को,
जंग गिराये ताज।
जंग बिना सब व्यर्थ है,
सोना रूपा राज।।

जंग उजाड़े खेतियाँ,
जंग बहाए खून।
चहल-पहल है जंग में,
जंग बिना सब सून।।

बाली चाहे फूटना,
दाना चाहे स्वाद।
महाबली की कामना,
दुनिया हो बरबाद।।

रहें न बस्ती हाट ना,
पंछी उड़ें अकास।
महाबली की योजना,
धरती पटे लहास।।

साथ निहारें रूप रँग,
साथ बहे जलधार।
दो नैनों के बीच में,
नाक बनी दीवार।।

परख प्रीत की हो रही,
अबके सावन मास।
धरा सूख काँटा हुई,
बादल फिरें अकास।।

ना निरमल हिरदय रहा,
ना बिस्वासी बात।
प्रीत पुरानी लूगरी,
सियत सियत फटि जात।।

दिन में चलें कुल्हाड़ियाँ,
फिरैं बनैले रात।
डाली डाली देखिए,
पीले पीले पात।।

पीली पीली सुबह है,
काली काली साँझ।
नेह–बीज कैसे जमे,
हुई धरित्री बाँझ।।

खड़ा बहेलिया हँस रहा,
डोर कपट की थाम।
पड़े जाल में चुग रहे,
दाना तोताराम।।

मुश्किल वापस लौटना,
दिखें शिकारी साफ़।
चिड़िया बोली पेड़ से,
करना भइया माफ़।।

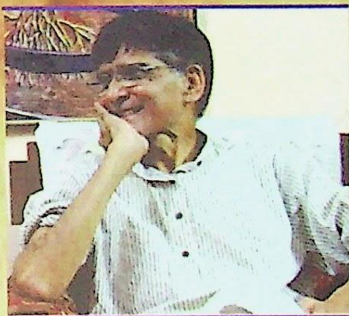
उसी दिशा में जल बहे,
ढलवाँ जिधर ज़मीन।
जल का आगम देख कर,
ढलवाँ भई ज़मीन।।

जुग बीता जब डोलते,
लिए मदारी साँप।
अब तो अपने देस में,
भए मदारी साँप।।

कन कन में कर्ता बसा,
रूप–रेख–गुन–हीन।
कन कन अपहर्त्ता बसा,
रूप–रेख–गुन–हीन।।

मन का मीता पा सकें,
साजन टेढ़ी खीर।
मीता का मन पा सकें,
साजन टेढ़ी खीर।।





अब्दुल बिस्मिल्लाह

5 जुलाई 1949 को इलाहाबाद जिले के बलापुर गाँव में जन्म

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम.ए. तथा डी.फिल.।

1993-95 के दौरान वार्सा यूनिवर्सिटी, वार्सा (पोलैण्ड) तथा 2003-2005 त जवाहर लाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र (भारत के राज-दूतावास) मास्को (रूस) विजिटिंग एसोसिएट प्रोफेसर रहे।

1988 में सोवियत संघ की यात्रा। उसी वर्ष ट्यूनीशिया में सम्पन्न अफ्रेशिया लेखक सम्मेलन में शिरकत। पोलैण्ड में रहते हुए हंगरी, जर्मनी, प्राक और पेरि की यात्राएँ।

प्रमुख कृतियाँ :

उपन्यास : झीनी झीनी बीनी चदरिया, समर शेष है, जहरबाद, दंतकथा, मुख क्या देखे

कहानी : अतिथि देवो भव, रैन बसेरा, रफ-रफ मेल, शादी का जोकर

कविता : वली मुहम्मद और करीमन बी की कविताएँ, छोटे बुतों का बया लोककाव्य विधा : कज़री, मुझे बोलने दो, कविता फिर लिखी जाएंगी

नाटक : दो पैसे की जन्नत

आलोचना : विमर्श के आयाम, अल्पविराम, आदि।

झीनी झीनी बीनी चदरिया का उर्दू तथा अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित। अने कहानियाँ मराठी, पंजाबी, मलयालम, तेलुगू, बांगला, उर्दू, जापानी, रूसी त अंग्रेजी में अनूदित

सम्प्रति : केन्द्रीय विश्वविद्यालय जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली हिन्दी विभाग में प्रोफेसर।

मोबाइल : 09811306331

N 978-93-80845-37-1

अनंग प्रकाशन
बी-107/1, गली मंदिर वाली,
समीप रबड़ फैक्ट्री उत्तरी घोण्डा, दिल्ली-110053
e-mail : anangprakashan@mail.com